पाठ ९ राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद

कविता का सारांश

यह पाठ रामचरितमानस के बालकांड से लिया गया है, जिसके रचयिता तुलसीदास हैं।

सीता स्वयंवर में जब भगवान राम शिव-धनुष तोड़ देते हैं, तो यह समाचार सुनकर परशुराम क्रोधित होकर सभा में पहुँचते हैं। उनका भयानक रूप देखकर सभी राजा और लोग डर जाते हैं। वे जनक से कठोर शब्दों में पूछते हैं कि धनुष किसने तोड़ा।

राम बहुत विनम्रता से उत्तर देते हैं, जबकि लक्ष्मण व्यंग्यपूर्ण और साहसिक भाषा में परशुराम को जवाब देते हैं। इससे दोनों के बीच तीखा संवाद होता है।

अंत में राम की विनम्रता और धैर्य के कारण परशुराम का क्रोध शांत हो जाता है।

कहानी का संदेश:-

- इस प्रसंग से हमें विनम्रता, धैर्य और संयम का महत्व समझ में आता है।

शब्दार्थ:

- भृगुपति – भृगुकुल के स्वामी
- कराला – भयानक, डरावना
- भुआला – राजा, महीप, भूपाल
- सुभायँ – स्वभाव, आदत, सहज प्रकृति
- चितवहिं – देखना, निरखना
- खुटानी – पूरी होना, समाप्त होना
- बहोरि – फिर, पुनः, अनंतर, इकट्ठा करना
- आसिष – आशीर्वाद
- ढोटा – पुत्र, बेटा, बालक
- जोटा – जोड़ा, समूह
- लोचन – आँख, देखने की क्रिया
- अनत – अन्यत्र, और कहीं
- चापखंड – धनुष का टुकड़ा या भाग
- रिस – क्रोध, रोष, गुस्सा
- बेगि – शीघ्र, जल्दी, वेगपूर्वक
- जहँ – जहाँ, जिस स्थान पर
- महि – पृथ्वी, महिमा, महत्त्व
- लहि – तक, पर्यंत
- त्रास – भय, डर
- बिधि – विधाता, ईश्वर
- अरध निमेष – आधा पल, पलक झपकने का समय
- कल्प – काल का बड़ा भाग (ब्रह्मा का एक दिन)
- बिलोके – देखा, अवलोकन किया
- भीरु – भयभीत, डरा हुआ
- भंजनिहारा – तोड़ने वाला, भंग करने वाला
- आयसु – आज्ञा, आदेश
- रिसाइ – क्रोध करना
- कोही – क्रोधी व्यक्ति
- सहसबाहु – सहस्रबाहु (पौराणिक वीर/चरित्र)
- बिलगाउ – अलग करना, पृथक करना

- बिहाइ – छोड़कर
- जैहहिं – जाएँगे
- परसु (परशु) – फरसा, कुल्हाड़ी जैसा शस्त्र
- परसुधरहिं – परशुराम (फरसा धारण करने वाले)
- लरिकाईं – बचपन, बाल्यावस्था
- भृगुकुलकेतू – भृगुकुल के दीपक (परशुराम के लिए संबोधन)
- तिपुरारि – त्रिपुरारी (भगवान शिव, शंकर)

अभ्यास

रचना से संवाद

मेरे उत्तर मेरे तर्क

निम्नलिखित प्रश्नों के सटीक उत्तर चुनिए और यह भी बताइए कि आपको ये उत्तर उपयुक्त क्यों लगते हैं?

1. "पितु समेत कहि कहि निज नामा। लगे करन सब दंड प्रनामा॥" यह पंक्ति सभा में उपस्थित लोगों की किस मन:स्थिति को दर्शाती है?

   (क) आदर और सम्मान (ख) भक्ति और श्रद्धा

   (ग) भय और शिष्टाचार (घ) प्रेम और सहिष्णुता

   उत्तर: (ग) भय और शिष्टाचार

   तर्क: परशुराम के अत्यंत क्रोधित और भयानक रूप (कराला बेषु) को देखकर सभा में उपस्थित सभी राजा भय से व्याकुल हो गए थे। अपनी जान बचाने और शिष्टाचार दिखाने के लिए वे अपने पिता के नाम के साथ अपना परिचय देते हुए दंडवत प्रणाम करने लगे ताकि मुनि का क्रोध शांत हो सके।

2. "जनक बहोरि आइ सिरु नावा। सीय बोलाइ प्रनामु करावा" पंक्ति से राजा जनक के व्यवहार की कौन-सी विशेषता उद्घाटित होती है?

   (क) संवेदनशीलता (ख) शिष्टता

   (ग) सहनशीलता (घ) उदासीनता

   उत्तर: (ख) शिष्टता

   तर्क: राजा जनक आदर्श और विनम्र शासक थे। परशुराम के आगमन पर उन्होंने झुककर प्रणाम किया और सीता से भी प्रणाम करवाया, जिससे उनका अतिथि-सत्कार और शिष्ट व्यवहार प्रकट होता है।

3. "अति रिस बोले बचन कठोरा।" जनक के प्रति परशुराम के कठोर वचन बोलने का मूल कारण था—

   (क) उचित आदर-सत्कार न मिलना (ख) जनक द्वारा समाचार छिपाना

   (ग) शिव-धनुष का खंडित होना (घ) अन्य राजाओं की सभा में उपस्थिति

   उत्तर: (ग) शिव-धनुष का खंडित होना

   तर्क: परशुराम शिव के परम भक्त थे। शिव-धनुष के टूटने को उन्होंने अपने आराध्य का अपमान माना, इसलिए वे क्रोधित होकर जनक से दोषी को अलग करने को कहने लगे।

4. राम का कथन “होइहि केउ एक दास तुम्हारा” उनके व्यक्तित्व की किस विशेषता को दर्शाता है?

   (क) कूटनीति और चतुराई
   (ख) विनम्रता और मर्यादा
   (ग) त्याग और समर्पण
   (घ) दृढ़ता और आत्मविश्वास

   उत्तर: (ख) विनम्रता और मर्यादा

   तर्क: परशुराम के अत्यंत क्रोधित होने पर भी श्रीराम ने उत्तेजित होने के बजाय बहुत ही कोमल शब्दों में उत्तर दिया कि धनुष तोड़ने वाला आपका ही कोई एक दास होगा। यह उत्तर उनकी असीम विनम्रता और उच्च मर्यादा को प्रकट करता है।

5. "सुनि मुनि बचन लखन मुसुकाने। बोले परसुधरहि अपमाने॥" लक्ष्मण के मुसकराने और उपहास भरे वचनों का क्या कारण था?

   (क) वे सभा में अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करना चाहते थे।
   (ख) उन्हें राम के प्रति अपना प्रेम प्रदर्शित करना था।
   (ग) वे परशुराम की शक्ति से अनभिज्ञ थे।
   (घ) वे परशुराम को चुनौती देना चाहते थे।

   उत्तर: (घ) वे परशुराम को चुनौती देना चाहते थे।

   तर्क: लक्ष्मण स्वभाव से वीर और निडर थे। परशुराम द्वारा स्वयं की प्रशंसा करने और सभा को डराने पर लक्ष्मण ने मुस्कुराकर उन पर व्यंग्य किया। उन्होंने बचपन में तोड़ी गई धनुहियों का उदाहरण देकर परशुराम के अहंकार को चुनौती दी और यह सिद्ध किया कि वे उनके क्रोध से डरने वाले नहीं हैं।

मेरी समझ मेरे विचार

नीचे दिए गए प्रश्नों पर चर्चा कीजिए और उनके उत्तर लिखिए—

1. "अरध निमेष कलप सम बीता" पंक्ति का भाव स्पष्ट करते हुए बताइए कि कविता में यह किसके संदर्भ में कहा गया है और क्यों?

   उत्तर: इस पंक्ति का अर्थ है कि आधा पल भी एक कल्प (करोड़ों वर्षों के युग) के समान भारी और लंबा प्रतीत हो रहा है। यह पंक्ति सीता जी के संदर्भ में कही गई है।

   - कारण: शिव-धनुष टूटने के बाद जब परशुराम अत्यंत क्रोधित होकर सभा में आए और सबको धमकाने लगे, तो सीता जी अपने विवाह और भविष्य को लेकर अत्यंत चिंतित और भयभीत हो गईं। उनके मन में आशंका थी कि मुनि का यह क्रोध कहीं इस मांगलिक कार्य में विघ्न न डाल दे, इसी मानसिक व्यथा के कारण उन्हें समय की गति अत्यंत धीमी लग रही थी।

2. "सो बिलगाउ बिहाइ समाजा। न त मारे जैहहिं सब राजा॥" पंक्ति के आधार पर बताइए कि परशुराम द्वारा दी गई इस चेतावनी का सभा में उपस्थित राज-समाज पर क्या प्रभाव पड़ा होगा? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

   उत्तर: परशुराम की चेतावनी का राज-समाज पर प्रभाव -

   - प्रभाव: परशुराम की इस चेतावनी—"जिसने धनुष तोड़ा है वह समाज से अलग हो जाए, नहीं तो सभी राजा मारे जाएंगे"—का पूरी सभा पर आतंक और भय का प्रभाव पड़ा।

- तर्क:
    - सभा में उपस्थित राजा भय के मारे व्याकुल हो गए और डरते हुए अपना और अपने पिता का नाम लेकर परशुराम को दंडवत प्रणाम करने लगे।
    - राजा जनक इतने भयभीत थे कि वे परशुराम के प्रश्नों का उत्तर तक नहीं दे पा रहे थे।
    - पूरी सभा "हाहाकार" करने लगी क्योंकि वे जानते थे कि परशुराम का क्रोध प्रलयंकारी है।

3. तुलसीदास ने राम और लक्ष्मण के माध्यम से एक ही परिस्थिति के प्रति दो अलग-अलग प्रतिक्रियाएँ दिखाई हैं। आपकी दृष्टि में परशुराम के क्रोध को शांत करने के लिए राम का 'विनय' का मार्ग उचित है या लक्ष्मण के 'तर्क' का? अपने उत्तर का उचित कारण और तर्क भी प्रस्तुत कीजिए।

   उत्तर: परशुराम जैसे क्रोधी व्यक्ति को शांत करने के लिए राम का 'विनय' का मार्ग अधिक उचित और व्यावहारिक है।

   - कारण और तर्क:
       - राम का मार्ग: राम ने स्वयं को परशुराम का 'दास' बताया, जिससे परशुराम के अहंकार को चोट नहीं पहुँची और स्थिति और अधिक बिगड़ने से बच गई। विनय से क्रोध की अग्नि को शांत किया जा सकता है।
       - लक्ष्मण का मार्ग: लक्ष्मण के तर्क और व्यंग्य ने 'आहुति' का काम किया, जिससे परशुराम का क्रोध और अधिक भड़क उठा। यद्यपि लक्ष्मण का तर्क न्यायसंगत था, किंतु उस समय वह केवल विनाश की स्थिति पैदा कर रहा था। अंततः स्थिति को राम की शीतलता और मधुर वचनों ने ही संभाला।

4. 'हृदयँ न हरषु बिषादु कछु बोले श्रीरघुबीरु॥' श्री राम के हृदय में न हर्ष था, न विषाद। यह उनके व्यक्तित्व के किन गुणों को दर्शाता है? उनका भावनात्मक संतुलन इस पूरे पाठ में उन्हें अन्य पात्रों से अलग कैसे स्थापित करता है?

   उत्तर: हृदयँ न हरषु बिषादु कछु' श्रीराम की समदर्शिता, धीरता और स्थितप्रज्ञता को दर्शाता है। वे न तो धनुष तोड़ने की सफलता पर हर्षित थे और न ही परशुराम के क्रोध को देखकर दुखी या भयभीत।

   - अन्य पात्रों से भिन्नता:
       - जहाँ परशुराम अत्यधिक क्रोध के वशीभूत थे।
       - लक्ष्मण उत्तेजना और चपलता दिखा रहे थे।
       - जनक और सभा के अन्य राजा भय और कातरता से भरे थे।

   इन सबके विपरीत, श्रीराम का भावनात्मक संतुलन उन्हें एक 'मर्यादा पुरुषोत्तम' के रूप में स्थापित करता है। वे पूरी परिस्थिति को एक साक्षी की तरह देख रहे थे और सही समय पर अत्यंत नपे-तुले शब्दों में अपनी बात रखकर मर्यादा की रक्षा कर रहे थे।

मेरी कल्पना मेरे अनुमान

नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपनी कल्पना और अनुमान के आधार पर दीजिए—

1. कल्पना कीजिए कि आप जनक की सभा में उपस्थित एक राजा हैं। परशुराम जी के आगमन से लेकर उनके गमन तक की कथा अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर: मैं जनक की सभा में उपस्थित उन अभागे राजाओं में से एक था जो शिव-धनुष को हिला तक न सके। जैसे ही श्रीराम ने उस विशाल धनुष को तोड़ा, उसकी भयंकर टंकार सुनकर मुनि परशुराम काल के समान वहाँ आ पहुँचे। उनका भयानक वेश और कंधे पर रखा फरसा देखकर हम सभी राजा भय से काँप उठे। डर के मारे मैंने अपने पिता का नाम लेकर उन्हें दंडवत प्रणाम किया ताकि उनके क्रोध से बच सकूँ।

मुनि ने जब टूटे हुए धनुष को देखा, तो वे क्रोध से गरजने लगे और महाराज जनक को धमकाने लगे। पूरी सभा में सन्नाटा पसर गया था। तभी लक्ष्मण जी ने मुस्कुराते हुए उन पर व्यंग्य करना शुरू किया, जिससे मुनि का क्रोध अग्नि में घी की तरह भड़क उठा। हम सब डरे हुए थे कि अब प्रलय निश्चित है। परंतु अंत में, श्रीराम ने अपनी अत्यंत शीतल और विनम्र वाणी से मुनि का मान रखा और विश्वामित्र जी के समझाने पर उनका क्रोध शांत हुआ। उनकी शक्ति की परीक्षा लेने के बाद जब मुनि का संशय दूर हुआ, तब वे तपस्या के लिए वन की ओर चले गए और हमने चैन की साँस ली।

2. "अति डरु उतरु देत नृपु नाहीं। कुटिल भूप हरषे मन माहीं॥" जनक द्वारा डर से चुप रहने पर अन्य राजा मन में प्रसन्न क्यों हुए होंगे? (संकेत— सोचिए, यह मनुष्य के व्यवहार की किस सच्चाई को उजागर करता है?)

   उत्तर: जब परशुराम जी के क्रोध के आगे महाराज जनक डर के मारे उत्तर नहीं दे पा रहे थे, तब सभा में उपस्थित कुटिल राजा मन ही मन प्रसन्न हो रहे थे। उनकी प्रसन्नता के निम्नलिखित कारण हो सकते हैं:

   - ईर्ष्या और पराजय का बदला: ये राजा स्वयं धनुष नहीं तोड़ पाए थे और स्वयंवर की चुनौती में असफल रहे थे, इसलिए वे जनक और राम-लक्ष्मण को मुसीबत में देखकर सुख का अनुभव कर रहे थे।
   - अहंकार की संतुष्टि: जब एक महान और मर्यादित राजा (जनक) को किसी के सामने लाचार देखा जाता है, तो कुटिल स्वभाव वाले लोगों को मानसिक संतोष मिलता है।

   - मानवीय व्यवहार की सच्चाई: यह प्रसंग मनुष्य के व्यवहार की इस कड़वी सच्चाई को उजागर करता है कि "परपीड़ा में आनंद" (दूसरों के दुःख में सुखी होना) एक मानवीय विकार है। कुटिल लोग अपनी असफलता को भूलकर दूसरों की विपत्ति का उत्सव मनाते हैं। यह पंक्तियाँ दर्शाती हैं कि संकट के समय जहाँ सज्जन व्यक्ति (जैसे राम) समाधान ढूँढते हैं, वहीं नीच सोच वाले लोग ईर्ष्यावश दूसरों को अपमानित होते देख खुश होते हैं।

विधा से संवाद

कविता का सौंदर्य

यह कविता तुलसीदास द्वारा रचित महाकाव्य रामचरितमानस के 'बालकांड' का एक अंश है जहाँ शिव-धनुष के टूटने से क्रोधित परशुराम के रोष भरे वाक्यों का उत्तर लक्ष्मण व्यंग्य वचनों से देते हैं। दोनों के बिच के ये संवाद कविता में नाटकीयता उत्पन्न करते हैं। संवादों के माध्यम से ही पूरी कविता का कथात्मक विकास होता है, संवाद ही चरित्र का निर्माण करते हैं और संवादों से हि बवों में विविधता भी आती है। इस प्रकार यह कविता काव्यात्मक विधा में संवाद-प्रस्तुति का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। निचे कविता के संवादों की कुछ विशेषताएँ दि गई हैं। ऊँ विशेषताओं को दर्शाने वाली पंक्तियों के उदाहरण कविता से ढूंढ़कर लिखिए।

संवादों की विशेषता:

- राम की विनम्रता
- परशुराम का रौद्र रूप
- लक्ष्मण का प्रत्युत्तर
- पौराणिक संदर्भ
- नाटकीयता

उत्तर: संवादों की विशेषताओं के उदाहरण

- राम की विनम्रता
- उदाहरण: "नाथ शंभु धनु भंजनिहारा। होइहि कोउ एक दास तुम्हारा॥"
- स्पष्टिकरण: राम स्वयं को परशुराम का 'दास' कहकर अत्यंत विनम्रता प्रकट करते हैं।
- परशुराम का रौद्र रूप
- उदाहरण: "कहु जड़ जनक धनुष केहि तोरा। बेगि दिखाउ मोहि सो भूपा॥"
- स्पष्टिकरण: यहाँ परशुराम का क्रोध, कठोर भाषा और आदेश देने का स्वर उनके रौद्र रूप को दर्शाता है।
- लक्ष्मण का प्रत्युत्तर (व्यंग्य)
- उदाहरण: "बहु धनुही तोरी लरिकाईं। कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाईं॥"
- स्पष्टिकरण: लक्ष्मण व्यंग्य करते हुए कहते हैं कि बचपन में कई धनुष तोड़े, तब तो आपने इतना क्रोध नहीं किया।
- पौराणिक संदर्भ
- उदाहरण: "सहसबाहु भुज छेदनिहारा। परसु धरि फिरत धरनि अपारा॥"
- स्पष्टिकरण: यहाँ परशुराम द्वारा सहस्रबाहु (कार्तवीर्य अर्जुन) का वध करने का उल्लेख पौराणिक कथा का संदर्भ है।
- नाटकीयता
- उदाहरण: "सो बिलगाउ बिहाइ समाजा। न त मारे जैहहिं सब राजा॥"
- स्पष्टिकरण: यह चेतावनी पूरी सभा में तनाव, भय और उत्सुकता पैदा करती है, जिससे नाटकीयता बढ़ती है।

भाव-पहचान एवं विश्लेषण

आपने पढ़ा कि राजा जनक की सभा में उपस्थित विभिन्न पात्रों की मन:स्थिति अलग-अलग है। नीचे दिए गए भावों/मन:स्थिति को दर्शाने वाली पंक्तियों को कविता से चिह्नित कीजिए और बताइए कि यह भाव किस पात्र से संबंधित है और उसकी इस मन:स्थिति का कारण क्या है? आपकी सहायता के लिए एक उदाहरण नीचे दिया गया है।

चिंता, क्रोध, व्यग्रता, भय, संयम/विनम्रता, ईर्ष्या/कुटिलता

भाव/मन:स्थिति	संबंधित पंक्ति	संबंधित पात्र	मन:स्थिति का कारण
चिंता	बिधि अब सँवरी बात बिगारी	सीता की माता सुनयना	पुत्री सीता के भविष्य (विवाह) के प्रति आशंकित और चिंतित

उत्तर: तालिका के माध्यम से विभिन्न भावों और उनके कारणों को स्पष्ट किया गया है:

भाव/मनःस्थिति	संबंधित पंक्ति	संबंधित पात्र	मनःस्थिति का कारण
• चिंता	- “बिधि अब सँवरी बात बिगारी”	- सीता की माता (सुनयना)	- पुत्री के विवाह में बाधा और परशुराम के क्रोध से उत्पन्न आशंका
• क्रोध	- “अति रिस बोले बचन कठोरा”	- मुनि परशुराम	- शिव-धनुष के टूटने को अपने आराध्य का अपमान मानना
• व्यग्रता	- “अरध निमेष कलप सम बीता”	- सीता जी	- सभा की तनावपूर्ण स्थिति और परशुराम के क्रोध से मानसिक बेचैनी
• भय	- “उठे सकल भय बिकल भुआला”	- सभा में उपस्थित राजागण	- परशुराम के भयानक रूप और क्रोधी स्वभाव को देखकर
• संयम / विनम्रता	- “होइहि केउ एक दास तुम्हारा”	- श्रीराम	- परशुराम को शांत करने और मर्यादा बनाए रखने का प्रयास
• ईर्ष्या / कुटिलता	- “कुटिल भूप हरषे मन माहीं”	- अन्य राजा	- स्वयंवर में असफल होकर दूसरों को संकट में देखकर प्रसन्न होना

“अति डरु उतरु देत नृपु नाहीं।”

परशुराम के पूछने पर जनक का मौन भयजनित है या विवेकपूर्ण निर्णय? संवाद की स्थिति के आधार पर विश्लेषण कीजिए।

विश्लेषण कैसे करें

1. संदर्भ स्पष्ट कीजिए— आरंभ में यह बताइए कि यह पंक्ति/घटना किस स्थिति में आई है, उससे पहले क्या घट चुका था।
2. विश्लेषण में घटना का वर्णन कम, उसका कारण और प्रभाव अधिक लिखना होता है— केवल क्या हुआ नहीं, बल्कि क्यों हुआ लिखिए।
3. कारण → भाव → परिणाम का क्रम बनाइए।
4. निष्कर्ष दीजिए— अंत में 1-2 पंक्तियों में ‘अपना’ स्पष्ट निष्कर्ष लिखिए जैसे— ‘इससे स्पष्ट होता है कि…’ या ‘यह पंक्ति संकेत देती है कि…’
5. संक्षेप में क्या, क्यों, कैसे के आधार पर विश्लेषण कीजिए और निष्कर्ष लिखिए।

उत्तर: "अति डरु उतरु देत नृपु नाहीं" का विश्लेषण

1. संदर्भ: यह पंक्ति उस समय आती है जब परशुराम जी ने सभा में आकर अत्यंत क्रोध में पूछा कि शिव-धनुष किसने तोड़ा है। उनसे पहले श्रीराम विनम्रतापूर्वक उत्तर दे चुके थे और लक्ष्मण जी व्यंग्य कर रहे थे, जिससे परशुराम का क्रोध सातवें आसमान पर पहुँच गया था।

2. कारण: शिव-धनुष का टूटना और परशुराम द्वारा दी गई वह चेतावनी कि "धनुष तोड़ने वाला समाज से अलग हो जाए, अन्यथा सभी राजा मारे जाएँगे," राजा जनक के मौन का मुख्य कारण थी।
3. भाव: यहाँ जनक के मन में 'भय' का भाव प्रबल था। वे एक पिता और राजा दोनों थे। उन्हें अपनी पुत्री सीता के भविष्य और अपनी प्रजा व आए हुए राजाओं के प्राणों की चिंता थी।
4. परिणाम: परशुराम के कठोर वचनों और उनके संहारक रूप को देखकर जनक जैसा विवेकशील राजा भी शब्दहीन हो गया। उनका मौन केवल डर नहीं, बल्कि उस स्थिति की गंभीरता को देखते हुए एक 'विवेकपूर्ण निर्णय' भी था, क्योंकि उस समय क्रोधित मुनि को उत्तर देना आग में घी डालने जैसा होता।
5. निष्कर्ष: यह पंक्ति संकेत देती है कि जनक का मौन मुख्य रूप से भयजनित था, किंतु यह उनकी दूरदर्शिता भी थी कि उन्होंने अनावश्यक तर्क-वितर्क के बजाय शांत रहकर मुनि के क्रोध को और अधिक भड़कने से रोका।

काव्य-पंक्ति और भाव

"रे नृप बालक काल बस बोलत तोहि न सँभार।
धनुही सम तिपुरारि धनु बिदित सकल संसारा॥"

(क) इन पंक्तियों को बोलते समय आपके चेहरे पर कौन-सा भाव होता?

उत्तर: न पंक्तियों को बोलते समय मेरे चेहरे पर 'रौद्र' (अत्यधिक क्रोध) और गर्व का भाव होता। चूँकि ये शब्द मुनि परशुराम के हैं, इसलिए इनमें लक्ष्मण के प्रति तिरस्कार, अपनी शक्ति का अहंकार और अपने आराध्य शिव के अपमान पर उपजा गहरा आक्रोश झलकना चाहिए। आँखों में तल्खी और चेहरे पर कठोरता का भाव होना अनिवार्य है।

(ख) आपने अनुभव किया होगा कि इस कविता में परिस्थितिवश प्रत्येक पात्र एक अलग भाव का प्रतिनिधि बन जाता है। निम्नलिखित पात्रों को आप कौन-कौन से भावों द्वारा प्रदर्शित करेंगे—

- परशुराम
- राम
- राजा जनक
- सभा में उपस्थित अन्य राजा
- लक्ष्मण

उत्तर: कविता के प्रसंगानुसार विभिन्न पात्रों को निम्नलिखित भावों द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है:

- परशुराम: रौद्र (क्रोध), अहंकार और शौर्य का भाव। वे शिव-धनुष के टूटने पर उत्तेजित हैं और बार-बार अपने फरसे का डर दिखाकर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध कर रहे हैं।
- राजा जनक: भय, व्याकुलता और चिंता का भाव। मुनि के क्रोध को देखकर वे अत्यंत डरे हुए हैं और निरुत्तर (मौन) होकर स्थिति की गंभीरता को समझ रहे हैं।
- लक्ष्मण: हास्य (व्यंग्य), निडरता और उत्साह का भाव। वे परशुराम की बातों का उत्तर मुस्कुराकर और तर्कपूर्ण व्यंग्यों से दे रहे हैं, जिससे उनकी वीरता और चपलता प्रकट होती है।
- राम: शांत, विनम्र और धैर्यवान भाव। वे पूरी सभा में सबसे संतुलित पात्र हैं, जो अपने संयम और मीठे वचनों से क्रोध की अग्नि को शांत करने का प्रयास करते हैं।
- सभा में उपस्थित अन्य राजा: भय और कुटिलता का भाव। जहाँ अधिकांश राजा परशुराम के डर से काँप रहे हैं, वहीं कुछ कुटिल राजा जनक और राम-लक्ष्मण को संकट में देख मन ही मन प्रसन्न भी हो रहे हैं।

विषयों से संवाद

1. सभा में परशुराम के प्रति राम के व्यवहार से उनकी विनम्रता, मर्यादा और धीर चरित्र के संबंध में पता चलता है जो किसी भी कुशल शासक के लिए आवश्यक है। आपको किन-किन परिस्थितियों में इन विशेषताओं का परिचय देना पड़ता है? चर्चा कीजिए और लिखिए।

   उत्तर: सभा में परशुराम के क्रोध के प्रति श्रीराम का व्यवहार उनकी विनम्रता, मर्यादा और धैर्य को दर्शाता है। एक कुशल शासक या नेतृत्वकर्ता के लिए ये गुण अनिवार्य हैं। हमें अपने जीवन में निम्नलिखित परिस्थितियों में इन विशेषताओं का परिचय देना पड़ता है:

   - विवाद या टकराव की स्थिति में: जब सामने वाला व्यक्ति अत्यधिक क्रोध में हो या बिना कारण दोषारोपण कर रहा हो, तब श्रीराम की तरह धैर्य (धीर चरित्र) रखकर स्थिति को शांत करना आवश्यक होता है।
   - समूह नेतृत्व (Leadership) के दौरान: एक टीम लीडर या कक्षा मॉनीटर के रूप में, जब टीम के सदस्यों के बीच मतभेद हों, तब निष्पक्ष और मर्यादित रहकर निर्णय लेना पड़ता है।
   - आलोचना का सामना करते समय: यदि कोई हमारे कार्य की आलोचना करे, तो उत्तेजित होने के बजाय विनम्रता से अपनी बात कहना और अपनी कमियों को स्वीकार करना ही मर्यादा है।
   - कठिन परिस्थितियों में निर्णय लेना: जब परिणाम हमारे पक्ष में न हों, तब भावनात्मक संतुलन बनाए रखना (जैसा कि राम के लिए कहा गया— 'हृदयँ न हरषु बिषादु कछु') एक कुशल व्यक्तित्व की पहचान है।

2. कविता में वर्णित प्रसंग सीता-स्वयंवर की सभा का है। प्राचीन भारतीय समाज में वर-चयन के लिए स्वयंवर की प्रथा प्रचलित थी। इसके अनेक उदाहरण मिलते हैं। ऐसी किसी एक पौराणिक-ऐतिहासिक आदि घटना/प्रसंग का वर्णन कीजिए जिससे स्वयंवर विधि द्वारा विवाह की जानकारी मिलती है।

   उत्तर: कविता में सीता-स्वयंवर का प्रसंग है, जहाँ शिव-धनुष तोड़ने की शर्त रखी गई थी। इसी प्रकार भारतीय इतिहास और पुराणों में द्रौपदी का स्वयंवर (महाभारत) एक प्रमुख उदाहरण है:

   - प्रसंग: पांचाल देश के राजा द्रुपद ने अपनी पुत्री द्रौपदी के विवाह के लिए एक अत्यंत कठिन शर्त रखी थी।
   - शर्त (स्वयंवर विधि): सभा के मध्य में एक ऊँचा खंभा था, जिसके ऊपर एक घूमता हुआ चक्र था और उस पर एक मछली रखी थी। नीचे तेल के कड़ाह (बर्तन) में मछली का प्रतिबिंब देखते हुए, धनुष से मछली की आँख को भेदना था।
   - विवाह: सभा में उपस्थित अनेक राजा और राजकुमार इस शर्त को पूरा करने में विफल रहे। अंततः, ब्राह्मण वेश में उपस्थित अर्जुन ने अपने कौशल और एकाग्रता से मछली की आँख को भेद दिया और द्रौपदी ने उन्हें वरमाला पहनाकर उनका वरण किया।

   निष्कर्ष: यह प्रसंग दर्शाता है कि प्राचीन काल में स्वयंवर केवल वर चुनने की विधि नहीं थी, बल्कि यह राजकुमारों की वीरता, कौशल और धैर्य की परीक्षा भी होती थी, जैसा कि सीता-स्वयंवर में श्रीराम के साथ हुआ।

सृजन

1. परशुराम के क्रोध को देखकर सीता और उनकी माता सुनयना दोनों चिंतित हैं और सीता के लिए एक-एक पल युग के समान भारी और लंबा प्रतीत हो रहा है। उनकी मन:स्थिति का अनुमान लगाते हुए उस क्षण दोनों के बीच चल रहा मौन संवाद लिखिए।

उत्तर: रशुराम के क्रोध को देखकर सीता जी के लिए एक-एक पल कल्प के समान भारी बीत रहा है। उस क्षण उनके बीच का मौन संवाद कुछ इस प्रकार हो सकता है:

- माता सुनयना (नजरों से): "पुत्री, विधाता ने तो बनी-बनाई बात बिगाड़ दी है। मुनि का यह भयंकर क्रोध और उनका फरसा देखकर मेरा हृदय काँप रहा है। क्या यह विवाह निर्विघ्न संपन्न हो पाएगा?"
- सीता (नजरों से): "माँ, मेरी व्याकुलता भी शब्दों से परे है। मुनि के कठोर वचन सुनकर एक-एक पल युगों जैसा लंबा लग रहा है। मैं मन ही मन ईश्वर से प्रार्थना कर रही हूँ कि वे मुनि के क्रोध को शांत करें और रघुवीर की मर्यादा की रक्षा करें।"

2. सभा में हो रहे संवाद को दूर बैठी सीता, राजा जनक और अन्य लोग भी सुन रहे थे। अपनी कल्पना और अनुमान के आधार पर लिखिए कि उस समय सीता के मन में किस तरह के भाव उत्पन्न हो रहे होंगे? सीता के दृष्टिकोण से पूरी घटना का विश्लेषण कीजिए।

   (संकेत— लक्ष्मण के प्रत्युत्तर पर चिंता, गर्व, हँसी, भय, शंका इत्यादि)

   उत्तर: स्वयंवर की सभा में हो रहे संवादों को सुनकर सीता के मन में मिश्रित भाव उत्पन्न हो रहे होंगे:

   - भय और चिंता: जब परशुराम ने शिव-धनुष खंडित देख कठोर वचन कहे और राजाओं को मारने की धमकी दी, तब सीता जी अत्यंत भयभीत हो गईं। उन्हें डर था कि कहीं यह विवाद किसी अनिष्ट का रूप न ले ले।
   - लक्ष्मण के प्रति शंका और हँसी: लक्ष्मण के व्यंग्यपूर्ण वचनों ("हमने बचपन में बहुत सी धनुहियाँ तोड़ी हैं") को सुनकर एक ओर उन्हें लक्ष्मण के साहस पर गर्व हुआ होगा और मुनि की झेंप पर मंद मुस्कान आई होगी, तो दूसरी ओर लक्ष्मण की निर्भीकता से मुनि का क्रोध बढ़ते देख मन में शंका भी हुई होगी।
   - राम के प्रति गर्व और भरोसा: श्रीराम के शांत और संतुलित उत्तर ("होइहि केउ एक दास तुम्हारा") सुनकर सीता जी का मन उनके प्रति अपार श्रद्धा और गर्व से भर गया होगा। उन्हें विश्वास हुआ होगा कि केवल श्रीराम का धैर्य ही इस संकट को टाल सकता है।

   निष्कर्ष: सीता के लिए यह पल परीक्षा की घड़ी था जहाँ वे एक तरफ अपने आराध्य (राम) की विजय देख चुकी थीं, वहीं दूसरी तरफ मुनि के कोप से उत्पन्न बाधा को विधाता का खेल समझकर सहमी हुई थीं।

3. कविता में सभा में उपस्थित राजाओं ने अपनी वीरता, पराक्रम आदि का उल्लेख करते हुए अपना परिचय दिया है। यदि आपको अपना परिचय देना हो तो आप अपना परिचय किस प्रकार देना उचित समझेंगे? अपना परिचय देते हुए कुछ वाक्य लिखिए जिससे आपके व्यक्तित्व की महत्वपूर्ण बातों का पता चलता हो।

   उत्तर: यदि मुझे इस सभा में या किसी भी महत्वपूर्ण अवसर पर अपना परिचय देना हो, तो मैं आत्म-प्रशंसा के बजाय अपने मूल्यों और व्यक्तित्व की विशेषताओं पर बल देना उचित समझूँगा:

   - विनम्रता: "मैं अपने कार्यों और व्यवहार में श्रीराम जैसी विनम्रता और मर्यादा को अपना आदर्श मानता हूँ। मेरा मानना है कि मधुर वाणी से सबसे कठिन हृदय को भी जीता जा सकता है।"
   - साहस और तर्क: "परिस्थितिवश मैं लक्ष्मण जैसी निर्भीकता और तार्किक सोच रखने का प्रयास करता हूँ, ताकि अन्याय के विरुद्ध खड़ा हो सकूँ।"
   - धैर्य: "कठिन समय में अपना मानसिक संतुलन (धीर चरित्र) बनाए रखना मेरी सबसे बड़ी शक्ति है।"
   - सीखने की प्रवृत्ति: "मैं स्वयं को एक निरंतर सीखने वाला जिज्ञासु मानता हूँ, जो बड़ों के प्रति सम्मान और छोटों के प्रति स्नेह रखने में विश्वास रखता है।"

निष्कर्ष: मेरा परिचय केवल मेरा नाम नहीं, बल्कि मेरे वे नैतिक मूल्य हैं जो मुझे एक मर्यादित और उत्तरदायी व्यक्ति के रूप में समाज में स्थापित करते हैं।

भाषा से संवाद

व्याकरण की बात

नीचे दी गई पंक्तियों को ध्यान से पढ़िए—

- “देखत भृगुपति बेषु कराला।”
- “बोले परसुधरहि अपमाने॥”
- “सुनि रिसाइ कह भृगुकुलकेतू”

यहाँ परशुराम को विभिन्न नामों से संबोधित किया गया है, जैसे— भृगुपति, परसुधर और भृगुकुलकेतू। आप इस कविता में अनेक विशेषताएँ देख सकते हैं, जैसे— दोहा-चौपाई का क्रम से होना, बिना वक्ता का नाम बताए उनका कथन कह देना, मुहावरों का उपयोग करना आदि। नीचे इस कविता की कुछ विशेषताएँ और उनके एक-एक उदाहरण दिए गए हैं। एक-एक उदाहरण आप लिखिए।

विशेषता	अर्थ	उदाहरण
अनुप्रास अलंकार	एक ही वर्ण की बार-बार आवृत्ति	*अरि करनी करि करिअ लराई*
अतिशयोक्ति अलंकार	बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहना	*अरध निमेष कलप सम बीता*
रूपक अलंकार	रूप का आरोपण करना	*पद सरोज मेले दोउ भाई*

उत्तर:

विशेषता	अर्थ	उदाहरण
• अनुप्रास अलंकार	- एक ही वर्ण की बार-बार आवृत्ति	- “बोलि बानी बिचारि बहोरी॥”
• अतिशयोक्ति अलंकार	- बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहना	- “भूप सहस दस एकहि बारा॥”
• रूपक अलंकार	- रूप का आरोपण करना	- “कर कमल बंदउँ गुरु पद कंजा॥”

बहुभाषिकता

यह कविता अवधी भाषा में लिखी गई है जो कि हिंदी भाषा का ही एक स्वरूप है और उत्तर प्रदेश के अनेक स्थानों पर बोली जाती है। कविता में ऐसे बहुत से शब्द आए हैं, जो अवधी भाषा के हैं। ऐसे शब्दों को पहचान कर उनके खड़ी बोली हिंदी रूप लिखिए। साथ ही आपकी भाषा में इनके लिए कौन-से शब्द प्रयुक्त होते हैं, उन्हें भी लिखिए।

उदाहरण—

अवधी शब्द	खड़ी बोली का शब्द	मेरी भाषा में शब्द
कोही	क्रोधी	
वेषु	वेष	

उत्तर:

अवधी शब्द	खड़ी बोली का शब्द	गुजराती	मराठी	पंजाबी
• कोही	- क्रोधी	- ગુસ્સાવાળો	- रागीट	- ਗੁੱਮੇ ਵਾਲਾ
• वेषु	- वेश	- વેશ	- वेश	- ਵੇਸ਼
• लोचन	- आँख	- આંખ	- डोळे	- ਅੱਖ
• बेगि	- जल्दी	- જલ્દી	- लवकर	- ਜਲਦੀ
• रिस	- क्रोध	- ગુસ્સો	- राग	- ਗੁੱਮਾ
• बिधि	- विधि / भगवान	- ઈશ્વર	- देव / विधाता	- ਰੱਬ
• बहोरि	- फिर	- ફરી	- पुन्हा	- ਫਿਰ
• ढोटा	- पुत्र	- દીકરો	- मुलगा	- ਪੁੱਤਰ / ਮੁੰਡਾ
• चितवहिं	- देखना	- જોવું	- पाहणे	- ਵੇਖਣਾ
• आसिष	- आशीर्वाद	- આશીર્વ◌ાદ	- आशीर्वाद	- ਅਸੀਸ

लोक में भाषा

नीचे कोष्ठक में कविता से कुछ शब्द चुनकर दिए गए हैं। उन शब्दों से संबंधित लोकोक्ति और उनका अर्थ लिखकर स्वतंत्र वाक्यों में प्रयोग कीजिए। आपकी सहायता के लिए एक उदाहरण नीचे दिया गया है।

मन राम राजा बात सिरु (सिर)

उदाहरण–

शब्द	लोकोक्ति	अर्थ
मन	मन के जीते जीत है, मन के हारे हार।	आत्मविश्वास, साहस और मनोबल से सफलता निश्चित है।

उत्तर:

शब्द	लोकोक्ति	अर्थ	वाक्य में प्रयोग
• मन	- मन के जीते जीत है, मन के हारे हार।	- आत्मविश्वास से सफलता मिलती है।	- यदि तुम मन से प्रयास करोगे तो सफलता अवश्य मिलेगी, क्योंकि मन के जीते जीत है।
• राम	- राम नाम सत्य है।	- जीवन नश्वर है, सत्य ही स्थायी है।	- हमें सदैव अच्छे कर्म करने चाहिए, क्योंकि अंत में राम नाम सत्य है।
• राजा	- जैसा राजा वैसी प्रजा।	- शासक के अनुसार ही प्रजा का व्यवहार होता है।	- विद्यालय में प्रधानाचार्य के अनुशासन के कारण सभी विद्यार्थी नियम मानते हैं, जैसा राजा वैसी प्रजा।
• बात	- बात का बतंगड़ बनाना।	- छोटी बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहना।	- उसने छोटी-सी गलती को लेकर बहुत झगड़ा किया, वह बात का बतंगड़ बना रहा था।
• सिर (सिरु)	- सिर पर चढ़ाना।	- अधिक लाड़-प्यार देना।	- बच्चे को इतना सिर पर मत चढ़ाओ, नहीं तो वह जिद्दी हो जाएगा।

गद्य-रूप

नीचे लिखी चौपाई को पढ़िए—

"नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा॥
आयसु काह कहिअ किन मोही। सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही॥"

इस चौपाई को हम गद्य-रूप में भी लिख सकते हैं। इसमें राम परशुराम से विनम्रतापूर्वक कहते हैं— हे नाथ! शिव-धनुष को तोड़ने वाला आपका ही कोई एक दास होगा आपकी क्या आज्ञा है, मुझसे क्यों नहीं कहते? राम की यह बात सुनकर क्रोधित परशुराम कहते हैं।

अब आप नीचे दी गई चौपाई को गद्य-रूप में लिखिए—

"अति डरु उतरु देत नृपु नाहीं। कुटिल भूप हरषे मन माहीं॥
सुर मुनि नाग नगर नर नारी। सोचहिं सकल त्रास उर भारी॥"

उत्तर: मुनि परशुराम के अत्यंत भयानक क्रोध को देखकर राजा जनक बहुत डर गए, जिसके कारण वे उनके प्रश्नों का कोई उत्तर नहीं दे पा रहे थे। उसी सभा में उपस्थित अन्य कुटिल राजा (जो स्वयंवर में असफल रहे थे) जनक को इस संकट में देखकर मन ही मन बहुत प्रसन्न हो रहे थे। वहाँ उपस्थित देवता, मुनि, नाग और नगर के सभी स्त्री-पुरुष भी अत्यंत चिंतित हो उठे और उन सभी के हृदय में मुनि के क्रोध का भारी भय समा गया।

मुख्य शब्दार्थ:

- अति डरु: बहुत अधिक डर।
- नृपु: राजा (जनक)।
- कुटिल भूप: बुरे स्वभाव वाले राजा।
- त्रास: भय या कष्ट।
- उर: हृदय।

गतिविधियाँ

1. यह कविता संवाद का सुंदर उदाहरण है। तालिका में दिए गए कथनों को पढ़कर बताइए कि कौन-सा कथन किसका हो सकता है। अपनी समझ से सही (✓) का चिह्न लगाइए—

कथन	राम	लक्ष्मण	परशुराम	जनक	सीता की माता (सुनयना)
• शिव के धनुष को तोड़ने वाला आपका कोई दास ही हो सकता है।					
• विधाता ने बनी-बनाई बात बिगाड़ दी।					
• सेवक वह होता है जो सेवा का काम करे।					
• इस कारण ये सब राजा आए हैं।					
• बचपन में हमने ऐसी बहुत-सी धनुहियाँ तोड़ डाली हैं।					
• क्या आज्ञा है, मुझसे क्यों नहीं कहते?					
• कहो जनक, किस कारण यह भीड़ है?					
• इसी धनुष पर इतनी ममता क्यों!					

उत्तर:

कथन	राम	लक्ष्मण	परशुराम	जनक	सीता की माता (सुनयना)
• शिव के धनुष को तोड़ने वाला आपका कोई दास ही हो सकता है।	✔				
• विधाता ने बनी-बनाई बात बिगाड़ दी।					✔
• सेवक वह होता है जो सेवा का काम करे।		✔			
• इस कारण ये सब राजा आए हैं।			✔		
• बचपन में हमने ऐसी बहुत-सी धनुहियाँ तोड़ डाली हैं।		✔			
• क्या आज्ञा है, मुझसे क्यों नहीं कहते?	✔				
• कहो जनक, किस कारण यह भीड़ है?			✔		
• इसी धनुष पर इतनी ममता क्यों!		✔			

2. रामचरितमानस के इस प्रसंग का मंचन लोकनाट्य, रामलीला और कठपुतली कला में बड़ी जीवंतता से किया जा सकता है। कलात्मक तकनीकों (ध्वनि, भाव, संगीत, वेशभूषा) का उपयोग करते हुए कविता को एक दृश्य नाटक के रूप में प्रस्तुत कीजिए।

   उत्तर: इस प्रसंग को रंगमंच या रामलीला के लिए एक दृश्य नाटक के रूप में इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है:

दृश्य: राजा जनक की भव्य सभा। बीच में टूटा हुआ शिव-धनुष रखा है। राजा और मुनि बैठे हैं। अचानक तीव्र गर्जना के साथ परशुराम का प्रवेश होता है।

- वेशभूषा (Costumes):
- परशुराम: शरीर पर भस्म, जटाएँ, हाथ में चमकता हुआ फरसा (परशु) और कंधे पर धनुष। चेहरे पर तीव्र क्रोध के भाव।
- राम-लक्ष्मण: राजसी वस्त्र, कंधे पर धनुष-बाण, शांत और तेजस्वी मुखमुद्रा।
- राजागण: मुकुट और आभूषण, चेहरे पर भय और घबराहट।
- ध्वनि और संगीत (Sound & Music):
- प्रवेश: परशुराम के आते ही पार्श्व संगीत में युद्ध के नगाड़ों और शंख की ध्वनि।
- संवाद: जब राम बोलें तो बाँसुरी का मधुर स्वर; जब परशुराम या लक्ष्मण बोलें तो ढोलक की तीव्र थाप।
- अभिनय और भाव (Acting & Emotions):
- परशुराम: चिल्लाते हुए— "कहु जड़ जनक धनुष कै तोरा!"। हाथ से फरसा घुमाते हुए क्रोध प्रदर्शित करना।
- लक्ष्मण: मुस्कुराते हुए— "बहु धनुहीं तोरीं लरिकाई"। उनकी आँखों में शरारत और साहस दिखना चाहिए।
- राम: हाथ जोड़कर झुकते हुए अत्यंत शांत स्वर में— "होइहि केउ एक दास तुम्हारा"।
- कठपुतली कला (Puppetry): कठपुतलियों के धागों के माध्यम से परशुराम का फरसा लहराना और राजाओं का डर के मारे काँपना (Vibration) बहुत जीवंत प्रभाव पैदा करेगा।

3. 'कठिन परिस्थितियों में भी सत्य कहने का साहस करना आवश्यक है।' इस विषय पर कक्षा में एक परिचर्चा अथवा वाद-विवाद गतिविधि के माध्यम से अपने विचार साझा कीजिए।

   उत्तर: 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' में लक्ष्मण का सत्य कहना साहस का प्रतीक है, यद्यपि वह परिस्थिति कठिन थी।

   मेरे विचार (वाद-विवाद हेतु):

   - सत्य की शक्ति: कठिन परिस्थितियों में सत्य कहना सबसे बड़ी परीक्षा है। लक्ष्मण ने परशुराम के क्रोध के बावजूद निर्भीक होकर सत्य और तर्क का साथ नहीं छोड़ा।
   - मर्यादा और सत्य का संतुलन: जलक्ष्मण का सत्य तीखा था, जबकि राम का सत्य विनम्र था।
   - परिणाम की चिंता: सच्चा व्यक्ति परिणाम की चिंता किए बिना सत्य का साथ देता है।
   - निष्कर्ष: सत्य कहना साहस है, पर उसे विवेक और मर्यादा के साथ कहना ही श्रेष्ठ है।

मेरी पहेली

पाठ में से चुनकर कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। अब अपने समूह में मिलकर ऐसी पहेलियाँ बनाइए जिनके उत्तर निम्नलिखित हों—

समाचार, धनुष, मन, नाग, नगर

उत्तर: शब्दों पर आधारित पहेलियाँ -

- देश-दुनिया की खबर मैं लाता, ज्ञान का सागर हूँ कहलाता।

  स्वयंवर की सभा में मुनि को, धनुष टूटने का संदेश सुनाता।

  उत्तर: समाचार
- शिव का हूँ मैं गहना भारी, जिसे तोड़ खुश हुए पुरारी।

  राम ने छुआ तो टूट गया, परशुराम का क्रोध जाग उठा भारी।

  उत्तर: धनुष
- कभी दुखी तो कभी सुखी होता, चंचल स्वभाव का मैं हूँ होता।

  सीता के लिए पल युग सा बीता, जब इसमें चिंता का बीज था बोता।

  उत्तर: मन
- गले में शिव के माला बनकर रहता, पाताल लोक का स्वामी कहलाता।

  मुनि के डर से सभा में उपस्थित, हर प्राणी जिसकी तरह था काँपता।

  उत्तर: नाग
- गलियाँ, चौबारे और ऊँची दीवारें, जहाँ बसते हैं लोग सारे।

  जनकपुर का वह हिस्सा हूँ मैं, जहाँ धनुष टूटने पर डरे नर-नारी सारे।

  उत्तर: नगर

भाषा संगम

"अति रिस बोले बचन कठोरा। कहु जड़ जनक धनुष कै तोरा॥"

नीचे 'धनुष' शब्द के लिए संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित कुछ भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त शब्दों की सूची दी गई है।

कमान (हिंदी); धनु:, चापम् (संस्कृत); धनुख (पंजाबी); कमान (क़ौस) (उर्दू); कमान (कश्मीरी); धनुषु, कमानु (सिंधी); धनुष्य (मराठी); धनुष, कामठुं (गुजराती); धनुष (कोंकणी); धनु (नेपाली); धनुक (बांग्ला); धनु (असमिया); लिरुङ् (मणिपुरी); धनुष, धनु, कार्मुक (ओड़िआ); धनुस्सु, विल्लु (तेलुगू); विल् (तमिल); धनुस्सुँ, विल्लुँ (मलयालम); बिल्लु, धनुष (कन्नड़)

इनके अतिरिक्त यदि आप धनुष शब्द को किसी और भाषा में भी जानते हैं तो उस भाषा में भी लिखिए।

उपर्युक्त वाक्य को अपनी मातृभाषा में भी लिखिए।

https://shabd.education.gov.in/lexicon.jsp

उत्तर: सूची में दी गई भाषाओं के अतिरिक्त, 'धनुष' शब्द को निम्नलिखित भाषाओं में इन नामों से भी जाना जाता है:

अन्य भाषाओं में 'धनुष' शब्द:

- भोजपुरी: धनुक
- मैथिली: धनुष
- अंग्रेज़ी (English): Bow (बो)
- लैटिन (Latin): Arcus (आर्कस)

अन्य भाषाओं में वाक्य अनुवाद: "अति रिस बोले बचन कठोरा। कहु जड़ जनक धनुष कै तोरा॥"

- गुजराती में: "ખૂબ ગુસ્સામાં કઠોર વચન બોલ્યા, હે જનક! આ ધનુષ કોણે તોડ્યું?"
- अंग्रेज़ी: "In great anger he spoke harsh words, 'O Janak, who has broken this bow?'"
- मराठी: "खूप रागाने कठोर वचन बोलले, हे जनक! हा धनुष्य कोणी तोडला?"
- पंजाबी: "ਬਹੁਤ ਗੁੱਸੇ ਨਾਲ ਕਠੋਰ ਬੋਲ ਬੋਲੇ, ਹੇ ਜਨਕ! ਇਹ ਧਨੁੱਖ ਕਿਸ ਨੇ ਤੋੜਿਆ?"

खोजबीन

बालकांड का यह अंश और गोस्वामी तुलसीदास जी की अन्य रचनाएँ इंटरनेट की सहायता से सुनिए और देखिए—

तुलसीदास— राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद

https://www.youtube.com/watch?v=7laq-BLnig4

https://www.youtube.com/watch?v=M7yZx2C0O68

दोहे— कबीर, रहीम, तुलसी

https://www.youtube.com/watch?v=A5v38R3VwaE

https://www.youtube.com/watch?v=cnrjLCkggr4&

गोस्वामी तुलसीदास

https://www.youtube.com/watch?v=oCLrWoky6UI

https://www.youtube.com/watch?v=MJbKZolLEss

कवि तुलसीदास और उनकी कविता

https://www.youtube.com/watch?v=rE-iTNN6SsE

उत्तर:

1. राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद (दृश्य और श्रव्य माध्यम)

   इन वीडियो को देखते समय आप निम्नलिखित पहलुओं पर ध्यान दे सकते हैं:

   - नाटकीयता: वीडियो के माध्यम से आप समझ पाएंगे कि कैसे परशुराम का रौद्र रूप, लक्ष्मण का व्यंग्य और राम की शांति एक जीवंत दृश्य पैदा करती है।
   - भाव-भंगिमा: 'रामचरितमानस' की चौपाइयों का गायन सुनकर शब्दों के पीछे छिपे भावों (जैसे क्रोध, उपहास या विनय) को पहचानना आसान हो जाता है।

2. दोहे— कबीर, रहीम और तुलसी

   तुलसीदास जी के दोहों की तुलना कबीर और रहीम से करने पर आप पाएंगे:

   - तुलसीदास: इनके दोहे मुख्य रूप से भक्ति, मर्यादा और नीति पर आधारित हैं।
   - कबीर व रहीम: जहाँ कबीर बाह्य आडंबरों पर प्रहार करते हैं, वहीं रहीम व्यावहारिक जीवन की सीख देते हैं। इन सबको सुनने से आपकी भाषाई समझ गहरी होगी।

3. गोस्वामी तुलसीदास का जीवन और कृतित्व

   साझा किए गए वीडियो से आपको उनके संघर्षपूर्ण जीवन और उनकी रचना प्रक्रिया के बारे में विस्तृत जानकारी मिलेगी:

   - समन्वय के कवि: तुलसीदास जी को 'समन्वय का कवि' कहा जाता है, जिन्होंने भक्ति और ज्ञान, राजा और प्रजा, तथा शिव और राम के बीच संतुलन स्थापित किया।
   - रचनाएँ: 'रामचरितमानस' के अलावा उनकी अन्य कृतियाँ जैसे 'विनय पत्रिका' और 'कवितावली' में भी राम के प्रति उनकी अनन्य भक्ति के दर्शन होते हैं।

विद्यार्थियों के लिए सुझाव:

इन वीडियो को देखने के बाद आप स्वयं से ये प्रश्न पूछ सकते हैं:

- क्या वीडियो में परशुराम का क्रोध वैसा ही है जैसा आपने पाठ पढ़ते समय कल्पना की थी?
- लक्ष्मण के संवादों को सुनते समय क्या आपको उनके तर्कों में वीरता का अनुभव हुआ?
- अवधी भाषा का उच्चारण सुनने के बाद क्या आपको शब्दों के अर्थ समझने में अधिक सुगमता हुई?